

तेल उम्म आमेर और असम के चराइदेव मोइदम को यूनेस्को द्वारा मान्यता

प्रलिस के लयि:

[असम के चराइदेव मोइदम](#), [वशिव धरोहर समति](#), [UNESCO वशिव धरोहर स्थल सूची](#), [गाज़ा पट्टी](#)

मेन्स के लयि:

भारतीय धरोहर स्थल, पुरातत्व स्थलों का संरक्षण

[स्रोत: इंडियन एक्सप्रेस](#)

चर्चा में क्यों?

हाल ही में [वशिव धरोहर समति](#) ने तेल उम्म आमेर, जसि मोनेस्ट्री ऑफ सेंट हलियरियन के रूप में भी जाना जाता है, को [संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक संगठन \(UNESCO\)](#) की [वशिव धरोहर स्थल सूची](#) तथा [खतरे में वशिव धरोहर की सूची](#) में शामिल किया।

- इसके अतिरिक्त, [असम के चराइदेव मोइदम](#) को यूनेस्को की वशिव धरोहर स्थल सूची में जोड़ा गया, जो भारत का 43वाँ वशिव धरोहर स्थल है।

तेल उम्म आमेर के संदर्भ में मुख्य तथ्य क्या हैं?

- ऐतहासिक पृष्ठभूमि:** [गाज़ा पट्टी](#) में स्थित तेल उम्म आमेर, चौथी शताब्दी ई.पू. का एक प्राचीन ईसाई मठ है। हलियरियन द ग्रेट (291-371 ई.) द्वारा स्थापित, इसे मडिलि ईस्ट में सबसे प्राचीन और सबसे बड़े मठवासी/मोनास्टिक समुदायों में से एक माना जाता है।
- पुरातात्विक महत्त्व:** इस स्थल में पाँच क्रमिक चर्च, स्नान परिसर और अभयारण्य परिसर, ज्यामितीय मोज़ाइक एवं एक विशाल तहखाना सहित व्यापक खंडहर हैं। इसे अपने स्थापना काल से लेकर उमय्यद काल (661-750 ई.) तक धार्मिक, सांस्कृतिक और आर्थिक गतिविधियों का केंद्र माना जाता रहा है।
- हाल ही में हुई कषति:** [गाज़ा पट्टी में चल रहे संघर्ष](#) से तेल उम्म आमेर सहित सांस्कृतिक स्थलों को काफी नुकसान पहुँचाया है।
 - वशिव धरोहर समति द्वारा इसे वशिव धरोहर सूची और खतरे में पड़ी वशिव धरोहरों की सूची में शामिल करने का नरिणय संघर्ष के बीच इस ऐतहासिक स्मारक को संरक्षित करने की तत्काल आवश्यकता को रेखांकित करता है।
- वशिव धरोहर स्थितिका तेल उम्म आमेर पर प्रभाव:**
 - वशिव धरोहर सूची में सूचीबद्ध होने से अंतरराष्ट्रीय मान्यता और संरक्षण कर्तव्य प्राप्त होते हैं। यदि किसी स्थल को "खतरे में" घोषित किया जाता है, तो उसे [संरक्षण प्रयासों के लिये अंतरराष्ट्रीय तकनीकी और वित्तीय सहायता में वृद्धि](#) प्राप्त हो सकती है।
 - दिसंबर 2023 में, यूनेस्को ने [वर्ष 1954 के हेग कन्वेंशन](#) के तहत तेल उम्म आमेर को अनंतिम उन्नत संरक्षण प्रदान किया, जो सशस्त्र संघर्ष के दौरान [जानबूझकर किये जाने वाले नुकसान से उच्चतम स्तर की सुरक्षा](#) प्रदान करता है।



नोट:

- खतरे में वशिव धरोहर की सूची अंतरराष्ट्रीय समुदाय को वशिव धरोहर सूची में शामिल किसी संपत्ति की वशिषताओं पर खतरों के बारे में सूचित करती है और सुधारात्मक कार्रवाई को प्रोत्साहित करने का लक्ष्य रखती है।
- इसमें सशस्त्र संघर्ष, प्राकृतिक आपदाएँ, प्रदूषण, अवैध शिकार, शहरीकरण और पर्यटन विकास जैसे खतरों का सामना करने वाली साइटें शामिल हैं।
 - सूची में प्रविष्टि आसनन खतरों या संपत्ति के वशिव धरोहर मूल्यों पर संभावित नकारात्मक प्रभावों के कारण हो सकती है।
- वर्ष 2019 में बाकू में अपने 43वें सत्र के दौरान, वशिव धरोहर समिति ने इस बात पर जोर दिया कि किसी संपत्ति को खतरे में वशिव धरोहर के रूप में सूचीबद्ध करने का उद्देश्य राज्य पक्ष को संपत्ति (धरोहर) के समक्ष आने वाली चुनौतियों का समाधान करने में मदद करने के लिये वैश्विक समर्थन जुटाना है।
 - इसमें संपत्ति के संरक्षण की वांछित स्थिति को प्राप्त करने हेतु सुधारात्मक उपायों की योजना विकसित करने के लिये वशिव धरोहर केंद्र और सलाहकार निकायों के साथ काम करना शामिल है।

असम के चराईदेव मोइदम के संदर्भ में मुख्य तथ्य क्या हैं?

- असम में चराईदेव मोइदम ऐतिहासिक महत्त्व रखते हैं क्योंकि ये अहोम राजवंश के समाधि स्थल हैं, जिनकी स्थापना 1253 ई. में कंगि सुकफा ने की थी।
 - इन पार्थिव टीलों को मोइदम के नाम से जाना जाता है, इनका इस्तेमाल राजघरानों और कुलीन वर्ग के शवों को दफनाने के लिये किया जाता था, जो अहोम वंश की अनूठी अंत्येष्टि प्रथाओं को दर्शाता है।
- प्राचीन मस्जिद के लोगों से मिलते-जुलते मोइदम चराईदेव मोइदम को 'असम के परिमडि' का उपनाम देते हैं, जो अब लोकप्रिय पर्यटक आकर्षण हैं, लेकिन जिनमें कई जीर्ण-शीर्ण अवस्था में हैं।
- अहोम, जिनोंने छह शताब्दियों तक असम पर शासन किया, दाह संस्कार के बजाय दफनाने की प्रथा का अनुसरण करते थे और मोइदम की भव्यता प्रायः दफन व्यक्तियों की स्थिति को दर्शाती थी।

- चाओलुंग सुकफा बर्मा से ब्रह्मपुत्र घाटी में चले गए, चराईदेव में पहली रियासत की स्थापना की। अहोम ने पुरानी राजनीतिक व्यवस्था का दमन किया और अपनी पारंपरिक मान्यताओं को बनाए रखते हुए हिंदू धर्म एवं असमिया भाषा को अपनाया।
 - सुकफा ने विभिन्न समुदायों और जनजातियों को सफलतापूर्वक आत्मसात किया, जिससे उन्हें 'बोर असोम' या 'ग्रेटर असम' के वास्तुकार की उपाधि मिली।
- असम में विशेष रूप से अहोम सेनापति लचति बोड़फुकन की 400वीं जयंती जैसे कार्यक्रमों के माध्यम से अहोम राजवंश की वरिष्ठता को कायम रखा जाता है। असम में प्रत्येक वर्ष 2 दिसंबर को सुकफा और उनके शासन की स्मृति में 'असोम दविस' मनाया जाता है।



दृष्टिभेन्स प्रश्न:

प्रश्न. सांस्कृतिक वरिष्ठता को संरक्षित करने में यूनेस्को विश्व धरोहर स्थलों के महत्त्व पर चर्चा कीजिये, विशेष रूप से टेल उम्म आमेर और चराईदेव मोइदम के हाल ही में शामिल किये जाने के संदर्भ में।

और पढ़ें: